International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(5): 128-130

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2021; 7(5): 128-130
© 2021 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 05-07-2021
Accepted: 11-08-2021

सुनील कुमार पाण्डेय
शोधार्थी, संस्कृत डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
सुनील कुमार पाण्डेय
शोधार्थी, संस्कृत डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत

वेदों में देवताओं का वर्गीकरण

सुनील कुमार पाण्डेय

सारांश
हिन्दू धर्म के वेदों में जिन देवताओं का उल्लेख किया गया है उनमें से अधिकतर प्राकृतिक भक्तियों के नाम है। जिन्हें देव कहकर संबोधित किया गया है। जिसमें आदित्य समूह, वसु समूह, रूद्र समूह, मरूतगण समूह, प्रजापति समूह आदि समूहों में बांटा गया है। वैदिक ऋषि इन प्राकृतिक भक्तियों की स्तुति करते हैं और कुछ जगह पर वे अपने ही ईष्ट देवताओं की पूजा–आराधना करते हैं। निश्चित ही प्राकृतिक शक्तियां के कई प्रकार हो सकते हैं।

परिचय
वेदों में देवताओं के वर्गीकरण के आधार पर समूह होते हैं। वेदों कोटि शब्द को अधिकतर लोगों ने करोड़ समझा और यह मान लिया गया कि 33 करोड़ देवता होते हैं। पदार्थ अलग होते हैं। देवी और देवता 33 करोड़ नहीं होते हैं। वर्गीकरण के आधार पर 33 कोटि यानी संस्कृत में कोटि शब्द के दो अर्थ एक अर्थ प्रकार और दूसरा अर्थ करोड़। देवी–देवताओं के संदर्भ में भी कोटि शाब्द का पहला अर्थ 'प्रकार' ही काम में लिया गया है।

प्रस्तावना
वेदों में वर्णित देवताओं का वर्गीकरण कई प्रकार से हुआ है। इनमें चार प्रकार मुख्य है–

1. स्थान क्रम के अनुसार।
2. परिवार क्रम के अनुसार।
3. वर्ग क्रम के अनुसार।
4. समूह क्रम के अनुसार।

1. **स्थान क्रम के अनुसार देवताः–** द्युस्थानीय यानी ऊपरी आकाश में निवास करने वाले देवता, मध्यमस्थानीय यानी अन्तरीक्ष में निवास करने वाले देवता और तीसरे पृथ्वी स्थानीय यानी पृथ्वी रहने वाले देवता।
2. **परिवार क्रम से वर्णित देवताः–** इन देवताओं में आदित्य, वसु, रूद्र आदि को गिना जाता है।
3. **वर्ग क्रम से वर्णित देवताः–** इन देवताओं में इन्द्रावरूण मित्रावरूण आदि देवता आते हैं।
4. **समूह क्रम से वर्णित देवताः–** इन देवताओं में सर्वदेवा आदि की गिनती की जाती है।
5. **33 कोटि देवी–देवताः–** इनमें 12 आदित्य, 11 रूद्र, 8 वसु और 2 अश्विनी कुमार हैं।

ऋग्वेद के सूक्तों में देवताओं की स्तुतियों से देवताओं की पहचान की जाती है। इनमें देवताओं के नाम अग्नि, वायु, इन्द्र, वरूण, मित्रा,वरूण अश्विन कुमार, विश्वदेवा, सरस्वती, ऋतु, मरूत, त्वष्टा, ब्रह्मस्पति, सोम दक्षिणा, इन्द्राणी, वरूनानी, द्यौ, पृथ्वी, पूषा आदि को पहचाना गया है और इनकी स्तुतियों का विस्तृत वर्णन मिलता है। जो लोग देवताओं के अनेकता को नहीं मानते हैं वे सब नामों का अर्थ परब्रह्म परमात्मा वाचक जगाते हैं और जो अलग–अलग मानते हैं वे भी परमात्मात्मक रूप में शक्ति मानते हैं। भारतीय गाथाओं और पुराणों में इन देवताओं का मानवीकरण या पुरूषीकरण हुआ है। फिर इनकी मूर्तियाँ बनने लगी, फिर इनके सम्प्रदाय बढ़ते गये और अलग–अलग पूजा–पाठ होने लगे। हिन्दू धर्मशास्त्र देवताओं का वर्गीकरण हुआ है उनमें ब्रह्मा, विष्णु और शैव का आगमन हुआ। इसके बाद में इनकी संख्या में वृद्धि होती चली गयी। निरूक्तकार प्रारम्भ के अनुसार देवताओं की उत्पत्ति आत्मा से की गयी है। देवताओं के सम्बन्ध में यह भी कहा जाता है किंतिखो देवता'' अर्थात् देवता तीन है। किंतु यह प्रधान देवता है। जिनके पति सृष्टि का निर्माण करना, पालन और संहार किया जाना माना जाता है। महाभारत के (शांति पर्व) में उनका वर्णन इस प्रकार से किया गया है–

आदित्या बुद्धिभास्तेषां विभश्च मरूतस्तया, अस्मिनौ तु स्मृतौ
रूद्रौ उपस्युमे समस्थितौ स्मृता स्वन्मिरतौ देवा ब्रसह्मणा इति
निश्चयः समेतत सर्व देवानां चतुर्थमेयं प्रकीर्तितम्।

आदित्यगण क्षत्रिय देवता, मरूदगण, वैश्य देवता, अश्विनीगण रूद्र देवता और अंगिरण ब्रह्मण देवता माने गए हैं। शतपथ ब्राह्मण मे भी इसी प्रकार से देवताओं को माना गया है।
रूद्र बहुईश्वरी धर्मों में देवताओं को पूरी तरह स्वतंत्र माना जाता है।

वेद परम्परा के प्रमुख देवता –
वेद में ब्रह्मा, विष्णु, रूद्र, सविता मित्र वरूण हैं। गणेश लक्षमी, विष्णु, शंकर, कृष्ण, सरस्वती, दुर्गा, इन्द्र, सूर्य, हनुमान, ब्रह्म सोम, वायु देवता, जब देवता, अग्नि देवता, अग्निदेवता, पार्वती कार्तिकेय, राम, शेषनाग, कुबेर, धन्वतरि इत्यादि प्रकार के देवताओं का वर्णन है।
वेदों में सोम शब्द पेय के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है, पौधे के रूप में प्रयुक्त हुआ है। और देवता के अर्थ में ही यही शब्द प्रयुक्त हुआ है। सोमपान से अमरता की प्राप्ति होती है। इन्द्र और अग्नि को प्रचुर मात्रा में सोमपान करते हुए बताया गया है। वेदों में मानव के लिए भी सोमपान की स्वीकृति है–

अपाम सोममृता अभूमागन्म ज्योतिरविदाम देवान्।
किं भूआत्मा न्कूपवरूरातिः किमु धूर्तिरमृत मर्त्यस्म।। ऋग्वेद।

वैदिक देवता
भारतीय ग्रंथ वेदों में वर्णित देवताओं को वैदिक देवता कहते हैं। ये आधुनिक हिन्दु धर्म में प्रचलित देवताओं से थोड़े अलग हैं। वेदों के प्रत्येक मंत्र का एक देवता होता है। देवता का अर्थ, दाता, प्रेरक, या ज्ञान प्रदाता होता है। जिन देवताओं का मुख्य रूप से वर्णन हुआ है, वे हैं– अग्नि, इंद्र, सोम, मित्रा वरूण, सूर्य, अश्विनौ, ईश्वर अथवा पृथ्वी आदि।
ये वैदिक देवता आज हिन्दू धर्म में व्यक्ति आधारित देवता जैसे–राम, कृष्ण, हनुमान, शिव, लक्ष्मी, गणेश, बालाजी, विष्णु, गणेश भक्ति आदि से अलग है। वेदों में शाश्वत वस्तुओं और भावनाओं को देवता माना गया है। जबकि पुराणों में दिक व्यक्तियों और प्राणियों को, जिन्होंने अनेक व्यक्तियों को सन्मार्ग दिखाया है। आधुनिक हेतू धर्म में पुराण और अन्य स्मृति ग्रंथों के देवताओं का अधिक प्रयोग है।
अन्य वैदिक देवताओं में रूद्रा आदित्य, दम्पत्ति वृहस्पति आदि आते हैं। वेदों में विश्वदेवता करके अखिल देवताओं का भी जिक्र है। जो इन सबको एक साथ संबोधित करता है।

देवता में शाब्दिक और चारित्रिक विवेचन–
देवताओं में भी शाब्दिक अर्थ या इनकी चारित्रिक रूप में दिखाने का भी प्रावधान है। जैसे, इन्द्र जिसका अर्थ बिजली होता है। को वृत्र का संहारकर्ता कहा गया है। वृत्र का अर्थ मेघ यानी बादल से है। इस कारण से इन्द्र को वर्षो कराने और उर्वरता बढ़ाने वाले मानव सदृश्य दिक व्यक्ति के रूप में निरूपित किया जाता है। पश्चिमी विद्वानों ने इन देवताओं के नाम का प्रतीक ग्रीक और पारसी धर्म के मिथकों के इन देवताओं से भी जोड़ा है। जैसे– द्यौ पित्र, सोम इत्यादि वेदों को समझने के लिए प्राचीन काल से चली आ रही पद्धति वेदांग में शब्द भूल के ग्रंथ निरूक्त में लिखा गया है– देवात कस्मात्, दानात्, दीपनात्, द्योतनात्। यानि देवता किस कारण से दान से प्रभावित करने से या द्योतित करने से। शतपथ ब्राह्मण, जो यजुर्वेद का विवेचन ग्रंथ है। उसमें लिखा है विद्वांसो ही देवा, यानि विद्वान ही देवता होते हैं, क्योंकि वो ज्ञान का दान और प्रकाश करते हैं।
देवता (संस्कृत के दिव् धातु से, जिसका अर्थ दिक होता है।) कोई भी पारलौकिक शक्ति का पात्र है या पराप्राकृतिक है। और इसलिये पूजनीय/अमर है। देवता या देव इस तरह के पुरूषों के लिये प्रयुक्त होता है और देवी इस तरह की स्त्रियों के लिये। हिन्दू धर्म में देवताओं को या तो परमेश्वर (ब्रह्म) का लौकिक रूप माना जाता है। तो उन्हें ईश्वर का सगुण रूप माना जाता है।
बृहदारण्य उपनिषद् में एक बहुत सुंदर संवाद है। जिसमें यह प्रश्न है कि कितने देव हैं। उत्तर यह है कि वास्तव में केवल एक हैं, जिसके कई रूप हैं। पहला उत्तर है। एक सृष्टि की रचना की, दूसरा उत्तर है त्रिदेव अर्थात् (ब्रह्म विष्णु, महेश) तीसरा उत्तर है। 33 कोटि अर्थात (33 प्रकार) इनमें 11 रूद्र, 8 बसु, और 2 अश्विन कुमार है। चौथा उत्तर है 3339 में इन्द्रलोक के देवता है। जिनको अलग–अलग कार्य मिला है जैसे– इन्द्र बारिश के देवता, पवन वायु के देवता, सूर्य देवता, अग्नि देवता, जल देवता इत्यादि है। वेद मंत्रों के विभिन्न देवता है। प्रत्येक मंत्र का देवता और ऋषि बीजक होता है।

वेदों में देवता
ऋग्वेद में अग्नि का स्थान– ऋक्संहिता का प्रथम मंत्र अग्नि देवता को ही सम्बोधित किया गया है तथा प्रथम पद भी 'अग्निम्' ही है। इससे यह सिद्ध हो जाता है कि ऋग्वैदिक देवताओं में अग्नि प्रधान देवता है। अग्नि का अर्थ है– वह देव जो यज्ञ में प्रदान की गयी हवि को देवताओं तक पहुँचाता है। ऋग्वेद के तीन प्रमुख देवताओं में अग्नि का द्वितीय स्थान है। ऋग्वेद के 200 सम्पूर्ण सूक्तों के अतिरिक्त अन्य अनेक सूक्तों में अन्य देवताओं के साथ अग्नि की स्तुति की गयी है। प्रायः ऋग्वेद के सभी मण्डलों में प्रारम्भिक सूक्त अग्नि को ही सम्बोधित किया गया है।
इस प्रकार वैदिक देव परम्परा में अग्नि का एक विशिष्ट स्थान है। अपने प्रशंसनीय कर्म यज्ञरक्षा, सत्यस्वरूपता आदि गुणों के बल पर वह हम सभी के लिए वन्दनीय है। इसलिए वैदिक ऋषि अग्निदेव से अपने उन्नति एवं कल्याण की प्रार्थना करते हैं।

अग्नि सूक्त के आधार पर अग्नि का स्वरूप विवेचन
1. **होतृत्व –** अग्नि यजमान की समृद्धि के लिए देवताओं को यज्ञ में बुलाते हैं। इसलिए उसे **'होता'** कहा गया है। इतना ही नहीं वह यज्ञकार्य में भाग लेने वाले देवताओं को लेकर यज्ञ में स्वयं आ जाते हैं।

देवो देवोभिरागमत् (मन्त्र 5)
2. **पुरोहितत्व–** अग्नि का यज्ञ से अभिन्न सम्बन्ध है। उसे सभी धार्मिक कार्यों में पहले स्थापित किया जाता है। इसीलिए उसे पुरोहित कहते हैं। यजमानके हित एवं कल्याण की भावना से ओत–प्रोत होने के कारण ही वह हमारा पुरोहित हैं–

अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् होतारं रत्नधातम्।

3. **प्रकाशकत्व–** अग्नि का प्रकाशमय स्वरूप सर्वत्र वर्णित है। वह स्वयं प्रकाशस्वरूप होकर चमकता रहता है। इसी कारण वह रात्रि के अन्धकार को दूर भगाने में समर्थ हैं यथा–

''उप त्वाग्ने दिवे दिवे दोषावस्तर्धिया, वयम् मनो भरन्त एमसि।''

'अग्नि' पृथ्वी स्थानीय देवताओं में सर्वप्रमुख है तथा वैदिक देवताओं में सर्वाधिक पवित्र देवता है। ऋग्वेद के लगभग 200 सूक्तों में अग्नि देवता की स्तुति की गयी है। प्रभाव तथा विस्तार की दृष्टि से इनद्र के बाद अग्नि देवता का ही स्थान है। ये अग्नि देव यज्ञीय अग्नि के प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत हुए हैं। इनको घृतपृष्ठ, शोचिष्केश, त्रिशिरा तथा सप्तशृङ्ग माना गया है। इनकी जिह्वा के

द्वारा ही देवता लोग हवि का भक्षण करते हैं। वैदिक मन्त्र में इनकी तीन प्रमुख विशेषताओं को बताया गया है–
(क) नेतृत्व शक्ति से सम्पन्न होना,
(ख) यज्ञीय आहुतियों को ग्रहण करना,
(ग) तेज एवं प्रकाश का अधिष्ठाता होना।

उपसंहार

वेदों में वर्णित सर्वोच्च शक्ति परमेश्वर के बाद हिन्दू धर्म में देवी और देवताओं का अंतर माना हैं देवताओं जिसे देवगण कहते हैं। देवगण भी देवताओं के किलए काम करते हैं। देवताओं के देवता अर्थात् देवाधिपति महादेव हैं। तो देवगणों के अधिपति भगवान गणेश जी हैं। जैसे–शिव के गण होते हैं। उसी तरह देवों के गण होते हैं। गण का अर्थ है–वर्ग, समूह, समुदाय। जहां राजा वहीं मंत्री। इसी प्रकार जहां देवता वहां देवगण भी। देवताओं के गुरू बृहस्पति हैं, तो दैत्यों के गुरू शुक्राचार्य हैं। देवताओं में ब्रह्म को जन्म देने वाला कहा गया है। विष्णु को पालन करने वाला कहा गया है। महेश को संसार ले जाने वाला कहा गया है। त्रिमूर्ति बगवान ब्रह्म–स्रस्वती (सर्जन तथा ज्ञान), विष्णु लक्ष्मी (पालन तथा साधन) और शिव–पार्वती (विसर्जन तथा शक्ति)। कार्य विभाजन के अनुसार पत्नियां ही पतियों की भक्तियां है।

सन्दर्भ

1. वैदिक देवता उद्भव और विकास – गया चरण त्रिपाठी
2. वैदिक देवशास्त्र – डॉ0 सूर्यकान्त
3. वैदिक योग सूत्र – पं0 हरिशंकर जोशी
4. वेदों का अध्ययन और अध्यापन –पं0 श्रीपद दामोदर
5. वेद के आख्यानों का स्वरूप – रामगोपाल शास्त्री
6. वैदिक साहित्य – किनीट जोशी
7. ऋक्तचयनम् – डॉ0 शशिशेखर चतुर्वेदी
8. वेदचमनम् – डॉ0 कृष्ण दत्त मिश्रे